VIDEO Play AUDIO

भजन

तर्ज :– यूं रूठों ना हसीना

निजधाम रंग मोहोल की, हर बात है निराली
हर बात है निराली

1) माशूक मीठी रसना, करे बातें मीठी–मीठी
जिनमें है प्यार मीठा, मस्ती भी मीठी मीठी
ये होंठ जब खुलें तो करते हैं बात रूह से
जब देखें तिरछे नैना रह जाये रूह तड़प के
निजधाम रंग मोहोल की.

2.) चौथे पोहोर का आलम, श्री राज श्यामा और हम
सुखपालों में बैठ घूमें, कभी सागरों कभी बन
हक जात को मिले हैं, निजधाम के नजारें
इन लाड़ली रूहों की, खातिर हैं सुख ये सारे
निजधाम रंग मोहोल की.

3.) जब दूर बैठी रूह को, नजदीक हक बुलाते
अंग अंग में इश्क भर के, कई लाड है लड़ाते
कई भाँत गुफ्तगु का, बेशुमार सुख मिला है
कम ज्यादा है नहीं वो, निसबत का सिलसिला है
निजधाम रंग मोहोल की.